**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2020; 6(1): 293-295
www.allresearchjournal.com
Received: 12-11-2019
Accepted: 20-12-2019

**डॉ. निशा झा**
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय इतिहास–विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ. निशा झा**
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय इतिहास–विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

# राहुल सांकृत्यायन का विज्ञान अध्ययन में उद्‌भूत अन्तर्दृष्ट

## डॉ. निशा झा

**सारांश**
राहुल सांकृत्यायन के लिए न केवल भारतीय संस्कृति अपितु उसका अर्जित साहित्य, कला, और दूसरी सांस्कृतिक निधियाँ अभिमान की चीज थीं। जब राहुल सांकृत्यायन ने देखा कि भारत की कई पुरातन सांस्कृतिक निधियाँ उपेक्षित पड़ी हुई हैं, तो उन्हें काफी दुःख हुआ और, अपनी इसी व्यथा को प्रदर्शित करने हेतु उन्होंने सांस्कतिक निधियों की उपेक्षा क्यों? शीर्षक लिखा था। इसी लेख में उन्होंने लिखा है कि, दीर्घकालव्यापी संस्कृति किसी जाति के लिए अभिमान की ही चीज नहीं बल्कि जिम्मेवारी की भी चीज है। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार हमारी भारतीय संस्कृति के हर काल के प्राचीनतम अवशेष समस्त भारत में यत्र–तत्र बिखरे पड़े हैं, जो कि हमारे देश का प्रमाणिक एवं वैज्ञानिक इतिहास लिखने में काफी सहायक सिद्ध हो सकते हैं। अतः सरकार को इनके प्रति उपेक्षा नहीं दिखानी चाहिए एवं हमारे देश के हर शिक्षित एवं संस्कृत भाई, बहिनों का भी यही कर्त्तव्य है कि वे यथा सम्भव इनकी सुरक्षा का प्रयत्न करें।

**प्रस्तावना**
राहुल सांकृत्यायन को भारतीय संस्कृति से गहरा लगाव था। भारतीय संस्कृति को उन्होंने गंगा नदी के प्रवाह की तरह निश्चल माना है। राहुल सांकृत्यायन ने संस्कृति का काफी सूक्ष्म एवं वैज्ञानिक विश्लेषण किया था। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वे संस्कृति को समाज की अनुवंशिकता बतलाते हुए लिखते हैं, ''पुरानी पीढ़ी अगली पीढ़ी से सादृश्य रखती है, पुरानी भाषा का स्थन लेने वाली नई भाषा भी माँ के समान होगी। सारी दुनिया में यह नियम लागू है। इसी सदृश्य को मानव समाज के भीतर हम संस्कृति कहते हैं। पीढ़ियों की अनुवंशिकता, दायभाग, इसी तरह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में संक्रमण करता है। संस्कृति उसी तरह हमारे समाज की अनुवंशिकता है, जैसे व्यक्ति अपनी शारीरिक और मानसिक बनावट में बाप दादाओं की अनुवंशिकता लिए पैदा होता है।'' [1] इसीलिये राहुलजी ने सांस्कृतिक निधियों के संरक्षण को प्रत्येक व्यक्ति का अत्यन्त आवश्यक कर्त्तव्य मानते हुए लिखा है, ''वस्तुतः सभ्य और संस्कृत कहलाने का हम उसी जाति को हो सकता है जो अपने संकट के समय में भी अपने सांस्कृतिक कर्त्तव्य को न भूले।'' [2] इस प्रकार सांस्कृतिक निधियों की सुरक्षा एवं भारत के सांस्कृतिक उत्कर्ष की भावना राहुल सांकृत्यायन के समस्त साहित्य में यत्र–तत्र प्रसंगवश दृष्टिगोचर होती है।

राहुल सांकृत्यायन के सृजन एवं चिन्तन का यदि सूक्ष्मावलोकन किया जाये तो हम पाते हैं कि उन्होंने अपने सृजन की प्रत्येक विधा में विज्ञान एवं वैज्ञानिक प्रविधि पर विशेष बल दिया है। राहलजी ने अपने ऐतिहासिक सजन में भी यथार्थवादिता एवं प्रमाणिकता पर विशेष जोर दिया है। [3] दर्शन के क्षेत्र में भी राहुल सांकृत्यायन प्रयोगाश्रित चिन्तन को ही अधिक महत्व देते थे। [4] राहुल सांकृत्यायन ने वैज्ञानिक दृष्टि और पद्धति को अपने लेखन में भी विशेष महत्व दिया है। अपनी कृति 'साम्यवाद ही क्यों?' की भूमिका में राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है – ''साम्यवाद मनुष्य के विकास की अवस्था की उपज है, इसलिए उसके मंतव्यों को अच्छी तरह समझने के लिए हमें मनुष्य की उत्पत्ति और विकास कैसे हुआ, इस विषय में वैज्ञानिकों का मत जान लेना बहुत जरूरी है।'' [5] और राहुल सांकृत्यायन ने उपर्युक्त पुस्तक को प्रारंभ करने से पूर्व मानव की उत्पत्ति एवं विकास को पूर्णतः वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

राहुल सांकृत्यायन को बचपन से ही विज्ञान, विशेष तौर पर गणित विषय के प्रति काफी रूचि थी। [6] राहुलजी यदि घुमक्कड़ी के फेर में न पड़ते, और अपनी नियमित पढ़ाई जारी रखते तो, उनके विचारों से स्पष्ट है कि गणित को ही उन्होंने अपने अध्ययन का मुख्य विषय बनाया होता। ऐसा न हो सका संभवतः राहुल सांकृत्यायन को इसका अफसोस भी था। [7] राहुल सांकृत्यायन ने गणित के उच्च अध्ययन हेतु अनेक विद्वानों को प्रोत्साहन किया। [8]

गणित एवं गणितज्ञों के प्रति राहुल सांकृत्यायन की रूचि जीवन पर्यन्त बनी रही। [9] गणित विज्ञान का मूल आधार है, और राहुलजी का वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपने मूल आधार में परिपक्व था। [10]

राहुल सांकृत्यायन को अपने प्रिय विषय गणित के और अधिक अध्ययन का अवसर उस समय प्राप्त हुआ जब वे दो वर्ष की सजा काटने हेतु अप्रैल 1923 ई. में हजारीबाग जेल गए। राहुलजी ने लिखा है – ''अब मैं गणित में लग गया। बीज गणित, त्रिकोणमिति, क्वार्डिनेट (निर्देशांक) ज्यामिति मुझे तो बहुत दिलचस्प मालूम होती थी। महीने पर महीने बीतत गए और मैं सारा सयम गणित में लगाने लगा, यह सिलसिला तभी टूटता जब मुझे पेचिश हो जाती और उसके लिए अस्पताल जाना पड़ता।'' [11] यह शायद संयोग ही था, कि राहुल सांकृत्यायन को गणित पढ़ाने वाले शारदा सेठ के शंकराचार्य स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ (सन् 1884–1960 ई.) भी उन दिनों राहुल सांकृत्यायन के साथ ही हजारीबाग जेल में बंदी थे। उनके पढ़ाने के तरीके की प्रशंसा करते हुए राहुलजी ने लिखा है – ''वह बड़े प्रेम से पढ़ाते, उनके पढ़ाने का ढंग बड़ा आकर्षक था। बीज गणित के सूत्रों को कंठस्थ करवाने की जगह उन्हें वह मुझसे सिद्ध करवाते। बीज गणित में अंक गणित अन्तर्निहित है, इसे उन्होंने शुरू के पाठों में बतला दिया। पढ़ाते वक्त पश्चिम के कितने ही प्रकांड गणितज्ञों, दार्शनिकों की कथाएँ सुनाते।'' [12]

राहुल सांकृत्यायन की गणित में रूचि उस पर आधारित ज्योतिष विज्ञान की ओर उन्हें ले गई। हजारीबाग जेल में ही राहुल सांकृत्यायन ने आधुनिक ज्योतिष का अध्ययन किया और कई ज्योतिष ग्रन्थों के अध्ययन के पश्चात स्वयं ने भी ज्योतिष पर लिखा। उन्हीं के अनुसार– ''बाईसवीं सदी (पुस्तक) के बाद मैंने अपने समय को ज्योतिष के एक बड़े ग्रन्थ और खगोल चित्र बनाने में लगाया। मैंने संस्कृत ज्योतिष के कई ग्रन्थ मंगाए गए और अंग्रेजी के भी। पारिभाषिक शब्द कुछ पराने लिए, कुछ नए बनाए और ग्रन्थ। लिखना शुरू किया। इसमें ग्रह गणित, नक्षत्र, नीहारिका, धूमकेतु आदि पर काफी लिखा गया था। साथ में तीन बड़े–बड़े खगोल चित्र दिए। दो में तो उत्तरी और दक्षिणी गोलार्ध के नक्षत्र मंडल के हजारों तारों के साथ दिए गए और तीसरे में पटना के अक्षांश पर दिखलाई देने वाले तारे थे। [13] यहीं पर प्राप्त खगोल विद्या की जानकारी के आधार पर राहुल सांकृत्यायन ने 'विश्व की रूप रेखा' नामक कृति की रचना की, जिसमें 9 नक्षत्र मंडल के चित्र दिए गए हैं। इसी कृति में तारों का एक बड़ा मानचित्र भी दिया गया है। इस प्रकार राहुल सांकृत्यायन कारावास के इन दिनों में गणित और ज्योतिष के साथ विज्ञान का गहन अध्ययन और लेखन किया। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार इसी दौरान उनकी वैज्ञानिक दृष्टि अधिक विस्तृत हुई। [14]

राहुल सांकृत्यायन के इसी विज्ञान अध्ययन से उद्भूत अर्न्तदृष्टि का परिणाम था कि उन्होंने 'वैज्ञानिक भौतिकवाद', 'विश्व की रूप रेखा', 'मानव समाज' तथा 'दर्शन–दिग्दर्शन' जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थों का सृजन किया। उपरोक्त ग्रन्थों के बारे में गुणाकर मुले का मानना है कि इन्हें व्यापक रूप से विज्ञान के ही ग्रन्थ मानना चाहिए, क्योंकि विज्ञान के गम्भीर अध्ययन के बिना न तो स्वयं राहुल सांकृत्यायन इनका प्रणयन कर सकते थे, और न विज्ञान से अनभिज्ञ कोई पाठक इन्हें भलीभांति समझ ही सकता है। [15] 'विश्व की रूप रेखा' तो शुद्ध वैज्ञानिक ग्रन्थ है, जिसे उन्होंने बोधगम्य भाषा में प्रस्तुत किया है ताकि हिन्दी के पाठक भी उसे आसानी से पढ़ एवं समझ सकें। [16] इसके प्रथम अध्याय में विश्व की स्थिति, धरती का विकास, वायुमण्डल, सूर्य, चन्द्रता, सौर परिवार एवं नक्षत्र मण्डल आदि के बारे में वैज्ञानिक दृष्टि से प्रकाश डाला गया है। द्वितीय अध्याय में परमाणु जगत की नवीनतम जानकारिया का उल्लेख है। तृतीय अध्याय में क्वाण्टम सिद्धांत, एक्सरे, एवं रेडियो एक्टिव तत्वों के बारे में सहज भाषा में लिख है। चतुर्थ अध्याय में जीव तत्वों, सेल्स, क्रोमोसोम्स, एवं शारीरिक मानव विज्ञान के विभिन्न पहलुओं का जीव वैज्ञानिक विवेचन किया है। पाँचवें अध्याय में मन एवं शरीर के विषय में विस्तार से लिखा है।

इस प्रकार अपने इस ग्रन्थ में राहुलजी ने जीवन जगत, मानव–शरीर तंत्र से लेकर प्रकाश कार्बन आदि अनेक महत्वपूर्ण विषयों से संबंधित वैज्ञानिक खोजों का क्रमबद्ध विवरण दिया है। सौर मण्डल के अध्ययन के विषय में राहुल सांकृत्यायन ने विभिन्न वैज्ञानिकों के प्रयासों का उल्लेख किया है। न्यूटन एवं हर्सल के योगदान को बतालते हुए उन्होंने लिखा है– ''न्यूटन के सत्रहवीं सदी के आविष्कार गुरुत्वाकर्षण (सन् 1666 ई०) और विश्व की यांत्रिक व्याख्या ने सत्रहवीं सदी और आगे की दार्शनिक विचारधारा पर प्रभाव डाला। अठारहवीं सदी में हर्सल ने न्यूटन के यांत्रिक सिद्धांत के अनुसार शनि की कक्षा से परे वरूण (सन् 1781 ई.) ग्रह तथा शनि के दो उपग्रहों की खोज की। इसके अतिरिक्त हर्सल ने एक दूसरे के गिर्द घूमने वाले 800 युग्म तारे खोज निकाले जिससे यह सिद्ध हो गया कि न्यूटन का यांत्रिक सिद्धांत सौर मण्डल के आगे भी लागू है।'' [17] राहुल सांकृत्यायन का मानना है कि बीसवीं सदी ने सपेक्षता, क्वाण्टम के सिद्धांत, इलेक्टान, न्यूटान आदि कितने ही साइंस के क्रांतिकारी सिद्धांत प्रदान किए हैं। बीसवीं सदी में नयी–नयी खोजों ने साइंस की प्रतिष्ठा और प्रभाव को और बढ़ा दिया है। इन सभी सिद्धांतों ने ईश्वर, धर्म, परमात्व तत्व, दर्शन आदि सभी के समक्ष खतरा उत्पन्न कर दिया है। इसीलिए केवल बुद्धिवादी दार्शनिकों की जगह आज प्रयोगवादियों की प्रधानता ज्यादा है। [18]

अपनी कृति 'मानव समाज' में राहुल सांकृत्यायन ने मनुष्य की उत्पत्ति और विकास का जो वर्णन प्रस्तुत किया है पूर्णतः वैज्ञानिक दृष्टि से ओत–प्रोत एवं पुरातात्विक–ऐतिहासिक साक्ष्यों पर आधारित है। यह समस्त सृष्टि एवं मानव विकास क्रम में 'वैज्ञानिक भौतिकवादी' दृष्टि से विश्लेषित किया गया है। राहुल सांकृत्यायन ने 'वैज्ञानिक भौतिकवादी' और श्विश्व की रूपरेखाश में जहाँ एक ओर वैज्ञानिक आविष्कारों का मानव समाज पर प्रभाव रेखांकित किया है, वहीं दूसरी ओर इन वैज्ञानिक सिद्धांतों के प्रकाश में धर्म दर्शन, नैतिकता तथा मूल्यवत्ता की व्याख्या की गई है। राहुल सांकृत्यायन ने आधुनिक विज्ञान में चार्ल्स डार्विन का स्थान बहुत ऊँचा माना है। क्योंकि डार्विन के विकासवादी सिद्धांत ने जैव और अजैव के आपसी रिश्ते को स्थापित किया और प्राणी विकास के क्रमिक रूप को प्रस्तुत किया। यह एक अद्वितीय खोज थी जिसके आलोक में समस्त विज्ञानों को एक नवीन दिशा मिली। [19] जिस तरह डार्विन ने प्राणि जगत के विकास के सिद्धांत का आविष्कार किया, उसी तरह मार्क्स ने मानव इतिहास के विकास के सिद्धांत को प्रतिपादित किया। [20] राहुल मार्क्स के विचारों से इसीलिए प्रभावित थे क्योंकि मार्क्स का समाजवाद, विज्ञान की भांति सिद्धांत और प्रयोग के सम्मिश्रण पर आश्रित है इसीलिए इसे वैज्ञानिक समाजवाद भी कहा जाता है। [21] राहुल सांकृत्यायन के अनुसार यह सिर्फ आन्दोलन एवं बहस की चीज नहीं है– ''रूस में सोवियत ने क्रांति के समय जितनी सफलता से घर और बाहर की विरोधी शक्तियों का मुकाबिला करके क्रांति को विजयी बनाया, उसने वैज्ञानिक समाजवाद–मार्क्सवाद की वैज्ञानिकता (सिद्धांत और प्रयोग के सांजस्य) को सिद्ध किया।'' [22] रूस का आर्थिक नव–निर्माण इसी का परिणाम था।

अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण के चलते प्रमाणिकता, यथार्थवाद, एवं सत्य, (सत्य में भी वैज्ञानिक सत्य) के प्रति राहुल सांकृत्यायन की अटूट आस्था थी। उनके अनुसार एक प्रयोगशाला में एक वैज्ञानिक जो कोई नई खोज करता है, इसी को जब दूसरे वैज्ञानिक अपनी–अपनी प्रयोगशाला में भी पाते हैं, तभी तो उसे वैज्ञानिक सत्य कहा जाता है। [23] जो कुछ बुद्धि पूर्वक है, राहुल सांकृत्यायन केवल उसी को वस्तु–सत् नहीं मानते थे। उनके अनुसार– ''जो कुछ प्रयोग या अनुभव में सिद्ध है, वह वस्तु–सत् है। अनुभवों से हमें सिर्फ उसी अनुभव को लेना चाहिए, जो कि

कल्पना से मिश्रित नहीं किया गया, जो शुद्धता और मौलिक निर्दोषिता से युक्त है। [24]

राहुल सांकृत्यायन ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'दर्शन–दिग्दर्शन' में अपने सूक्ष्म वैज्ञानिक– दृष्टिकोण का परिचय देते हुए विज्ञान तथा दर्शन के सम्बन्ध को काफी बोधगम्य ढंग से प्रस्तुत किया है। राहुल सांकृत्यायन के अनुसार जब हमें विज्ञानवाद के गन्धर्व नगर से नीचे से उतरकर वास्तविक जगत में आते हैं तो फिर देखते हैं कि– भौतिक जगत, प्राकृतिक जगत, मन की उपज नहीं है, बल्कि भौतिक तत्व की उपज मन है। सृष्टि का सारा सिलसिला यह बतलाता है कि शुरू में परमाणु था, भौतिक तत्व था, जीव अजीव के बीच वाइरस व वैक्टीरिया जैसे एक सेल वाले अत्यन्त सूक्ष्म तत्व थे। फिर एक सेल वाले प्राणियों से क्रमशः विकास होते–होते अस्थि रहित, अस्थिधारी, स्तनधारी जीव, यहाँ तक कि कुछ लाख वर्ष पहले मनुष्य आ मौजूद हुआ। यह सारा सिलसिला यह नहीं बतलाता है कि आरम्भ में मन था, उसने सोचा जगत हो आय और जगत अस्तित्व में आ गया। बल्कि सारा विज्ञान तथा भूगर्भ शास्त्र एवं विकास सिद्धांत हमें यही बतलाते हैं कि भौतिक तत्व प्राणी से पहले मौजूद थे, प्राणी बाद की परिस्थिति की उपज है। अतः मन भौतिक तत्व की उपज है। इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि मन भौतिक तत्व मात्र हैं राहुलजी लिखते हैं– ''भौतिक तत्व सदा बदल रहे हैं, जिससे परिस्थिति में गड़बड़ी, विरोध (=द्वन्द्व) शुरू होता है, जिससे द्वन्द्वात्मक परिवर्तन गुणात्मक परिवर्तन होता है। गुणात्मक परिवर्तन हो जाने के बाद हम उसे 'वही चीज' नहीं कह सकते, क्योंकि गुणात्मक परिवर्तन एक बिल्कुल नई वस्तु हमारे सामने उपस्थित करता है। मन इसी तरह का भौतिक तत्वों से गुणात्मक परिवर्तन है। वह भौतिक तत्वों से पैदा हुआ है किन्तु अभौतिक तत्व नहीं है।'' [25]

## निष्कर्ष

राहुल सांकृत्यायन का मन एवं भौतिक तत्वों का उपर्युक्त विश्लेषण उनकी वैज्ञानिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करता है, साथ–साथ दार्शनिक दृष्टि को भी रेखांकित करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि राहुल की विज्ञान अध्ययन से उद्भूत अर्न्तदृष्टि ने उनके लेखन को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। बिना किसी विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त किए राहुल सांकृत्यायन में इतने अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकसित होना अपने आप में एक अनूठी बात थी। उन्होंने कहा था कि मैं नहीं जानता कि किसी विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक विषयों का विधिवत अध्ययन न कर पाने से 'वैज्ञानिक' न हो सकने का राहुलजी को तनिक भी अफसोस रहा या नहीं। संभवतरू यह सवाल हा गलत है। राहुल सांकृत्यायन तो वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले, वैज्ञानिक भौतिकवादी में गहन आस्था रखने वाले, लेखन व अन्वेषण में वैज्ञानिक विधि को महतव देने वाले और वैज्ञानिक उपलब्धियों का सतत ज्ञानार्जन करते रहने वाले अध्येता को वैज्ञानिक नहीं तो और क्या कहा जाये।

## संदर्भ


1. राहुल सांकृत्यायन, अकबर, इलाहाबाद, 1967, पृ.– 336
2. राहुल वाङ्गमय, खण्ड–2, जिल्द–2, दिल्ली, 1994, पृ.– 452
3. राहुल सांकृत्यायन, अतीत से वर्तमान, वाराणसी, पृ.–187
4. राहुल सांकृत्यायन, दर्शन–दिग्दर्शन, इलाहाबाद, 1998, भूमिका
5. राहुल सांकृत्यायन, साम्यवाद ही क्यों, इलाहाबाद, 1977, भूमिका
6. राहुल सांकृत्यायन, मेरी जीवनयात्रा, भाग–1, कलकत्ता, 1950, पृ.– 37, 42 एवं 43
7. राहुल सांकृत्यायन, मेरी जीवनयात्रा, भाग–2, कलकत्ता, 1951, पृ.– 299
8. वही, पृ.– 298–99
9. वही, पृ.– 299
10. वही, पृ.– 300
11. राहुल सांकृत्यायन, मेरी जीवनयात्रा, भाग–1, कलकत्ता, 1950, पृ.– 386–87
12. वही, पृ.– 387
13. वही, पृ.– 391
14. वही, पृ.– 393
15. गुणाकार मुले, स्वयंभू महापंडित, नई दिल्ली, 1993, पृ.– 110
16. राहुल सांकृत्यायन, विश्व की रूपरेखा, प्रयाग, 1944, प्राक्कथन
17. वही, पृ.– 300
18. राहुल सांकृत्यायन, दर्शन–दिग्दर्शन, इलाहाबाद, 1998, पृ.– 279– 286
19. राहुल सांकृत्यायन, घुमक्कड़ शास्त्र, इलाहाबाद, 1994, पृ.– 7
20. राहुल सांकृत्यायन, मानव समाज, कलकत्ता, 1993, पृ.– 284
21. वही, पृ.– 286
22. वही, पृ.– 297
23. विष्णुचन्द्र शर्मा, राहुल का भारत, इलाहाबाद, 1995, पृ.– 84
24. राहुल सांकृत्यायन, दर्शन–दिग्दर्शन, इलाहाबाद, 1998, पृ.– 287
25. वही, पृ.– 277–78